यह गीत तो बच्चों ने बहुत बार सुना है। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप समझानी देते हैं कि यह समय रोने का नहीं है। यह समय बहुत भारी कमाई करने का है। कमाई कराने लिए ही बाप आया हुआ है। कमाई भी अथाह है जिनको जितनी करनी हो वो कर लेवें। यहाँ है ओपनिंग ज्ञान रत्नों से झोली भरने की कमाई। यह है भक्ति की लिये। तो है भक्ति यह है ज्ञान। मनुष्य यह नहीं जानते हैं। भक्ति शुरू होती ही जब रावण राज्य शुरू होता है। फिर ज्ञान भी तब शुरू होता है जब बाप आकर राम राज्य स्थापन करते हैं। ज्ञान है ही नई दुनिया के लिये। भक्ति है पुरानी दुनिया के लिये। अभी बाप कहते हैं पहले तो अपने को देही अभिमानी समझना है। मनुष्य सब रोंग हो गये हैं ना। तुम बच्चों की बुद्धि है पहले आत्मा है पीछे शरीर है। परन्तु ड्रामा प्लान अनुसार उल्टा समझ लिया है कि पहले हम देह हैं फिर देही हैं। बाप कहते हैं देह तो विनाशी है। इसको तो तुम लेते हो और छोड़ते हो। संस्कार आत्मा में रहते हैं। देह में संस्कार रहते तो सब जल जाते। आत्मा ही साथ में अच्छे वा बुरे संस्कार ले जाती है। रावण राज्य में बुरे संस्कार आसुरी बन जाते हैं। फिर आसुरी संस्कारों को दैवी बनाने लिये बाप को आना पड़ता है। यह सारी रचना उस एक रचता की है। उनको सभी फादर कहते हैं। हर लौकिक बाप को भी फादर कहा जाता है। बाप और मां यह दोनों अक्षर बहुत मीठे हैं। रचता तो पहले बाप को ही कहेंगे। वे पहले मां को एडाप्ट करते हैं। फिर रचना रचते हैं। बेहद का बाप भी कहते हैं कि मैं आकर इनमें प्रवेश करता हूँ। इनका नाम रखा है। कहते भी हैं भागीरथ। मनुष्य का ही चित्र दिखाते हैं। कोई बैल आदि नहीं है। भागीरथ मनुष्य का ही तन है। बाप ही आकर बच्चों को अपना परिचय देते हैं। तुम जानते हो हम बाप दादा के पास जाते हैं। सिर्फ बाप कहेंगे तो वो तो निराकार हो जाता है। निराकार बाप के पास तो तब जा सकते हैं जब शरीर छोड़े तो जावें। ऐसे तो कोई भी जा नहीं सकते हैं। क्योंकि आत्मा तमोप्रधान है। इसलिये वापस परमधाम में जा नहीं सकते। इस समय सब आत्मायें तमोप्रधान हैं। उड़ नहीं सकती। यह बाप ही नालेज देते हैं। यह नालेज है ही बाप के पास। बाप है ज्ञान का सागर। पानी की बात नहीं है। ज्ञान रत्नों का सागर है। इनको नालेज है। नालेज पानी को नहीं कहा जाता है। जैसे मनुष्य को हिस्टरी जॉग्राफी आदि की नालेज होती है। यह भी नालेज है। इस नालेज के लिये भी ऋषि मुनि आदि सब भी कहते थे कि रचता और रचना की नालेज को हम नहीं जानते। वो तो एक रचता ही जानें। झाड़ का बीज रूप भी वो ही है। सृष्टि की आदि मध्य अन्त का नालेज भी इस बीज को मालूम उनमें ही है। तो जब आवे तब सुनावे। कोई भी मनुष्य को सृष्टि की आदि मध्य अन्त की नालेज है नहीं। अभी तुमको नालेज मिली है। तो तुम इस नालेज से मनुष्य से देवता बनते हो। नालेज पाकर फिर प्रालब्ध पाते हो। वहाँ फिर इस नालेज की दरकार नहीं रहेगी। ऐसे नहीं कि देवताओं में यह ज्ञान नहीं है तो वो इग्नोरेंट हैं। वो तो नालेज से पद प्राप्त कर लेते हैं। बाप को पुकारते ही हैं कि बाबा आओ हम पतितों को पावन होने का रास्ता बताओ अथवा नालेज बताओ। क्योंकि जानते नहीं हैं। अभी तुम जानते हो कि हम आत्मायें यहाँ की रहने वाली नहीं हैं। हम आत्मायें परमधाम अथवा शान्ति धाम में रहती। यहाँ आत्मायें शरीर में रहती हैं। यहाँ आये हैं पार्ट बजाने के लिये पुराने शरीर आ करके ... कहा ही जाता है कलियुगी पुरानी दुनिया। तो जरूर नई थी। जो कब थी कौन राज्य करते ... नहीं जानते हैं। तुमको अभी बाप द्वारा जाना है। बाप है ज्ञान का सागर। सदगति ... करते हैं कि बाबा आकर हमारे दुःख हरो। सुख शान्ति दो। नई दुनिया सतयुग में ... तब तो कहते हैं हमारे दुःख हरो। आत्मा जानती है परन्तु तमोप्रधान ... एक परिचय दे रहे हैं। मनुष्य तो ना आत्मा को ना परमात्मा को जानते ...

मुनि वादी

भी बड़े-2 सिंहासन पर बैठते हैं। परन्तु कुछ भी नहीं जानते हैं। उनकी

पार्लियामेंट में फिर राजायें आदि तख्त पर बैठने वाले उनको भी कितना अपना अभिमान रहता है। बाप कहते हैं इन सब का यह मिथ्या अभिमान है। आत्म-अभिमान तो है नहीं। आत्मा का ज्ञान ही नहीं है। तो प्र- अभिमानी बने। आत्मा को ही नहीं जानते तो परमात्मा को फिर कैसे पहचानेंगे। इसलिये उनको जैसी जानवर कहा जाता है। आगे तुम भी नहीं जानते थे। बन्दर से भी बदतर थे। अभी ज्ञान मिला है तो समझते हो। शक्ल सूरत मनुष्य की थी, सीरत बन्दर की थी। अभी बाप ने नालेज दी है तो हम भी नालेज फुल बन गये हैं रचता और रचना का ज्ञान मिला है। तुम जानते हो भगवान हमे पढ़ाते हैं। तो कितना नशा रहना चाहिये। बाबा है ज्ञान का सागर। उनमे बेहद का ज्ञान है। तुम किसके पास भी जाओ तो सृष्टि की आदि मध्य अन्त का ज्ञान तो क्या परन्तु हम आत्मा क्या चीज है वो भी नहीं जानते हैं। बाप को याद भी करते हैं कि दुःख हर्ता सुख कर्ता फिर भी ईश्वर सर्वव्यापी कह देते हैं। बाप कहते हैं ड्रामा अनुसार इनका भी कोई दोष नहीं है। माया बिलकुल ही तमोप्रधान तुच्छ बुद्धि बना देती है। भक्ति अर्थात दुर्गति के अभिमान में कितना पड़े हुये हैं। उनको कुछ पता नहीं पड़ता है। बाप समझाते हैं तुम बुलाते हो कि हम दुर्गति में हैं आकर सद्गति करो। फिर भी दुर्गति में अपने को क्यों नहीं समझते हो? अभी बाप ने तुमको समझाया है तो तुम फील करते हो कि बरोबर भक्ति दुर्गति है। तब तो पुकारते हैं कि आकर पतित से पावन बनाओ। परन्तु जब तक ज्ञान नहीं है तो दुर्गति को ही अच्छा समझते हैं। कीड़ों को गन्द ही में सुख भासता है। यह भी है कीड़े बाप आते हैं गन्द से निकालने। दुबन में फंसे हुये हैं। ज्ञान का पता ही नहीं तो क्या करेंगे। दुबन में फसे पड़े हैं। फिर उनको निकालना ही बड़ा मुश्किल हो जाता है। निकाल कर आधा सीना तक ले आओ फिर भी हाथ छुड़ा कर गिर पड़ते हैं। औरों को ज्ञान भी देते सावधान करते फिर भी माया का थप्पड़ लगने से खुद डूब जाते हैं। दूसरे को निकालने की कोशिश करते हैं और खुद फिर गिर पड़ते हैं। फिर उनको निकालने में कितनी मेहनत हो जाती है। क्यों कि डोंग बाज श्रीमत के विरूद्ध चलते हैं। माया से हार जाते हैं। उनको अपना पाप ही अन्दर में खाता है। माया से लड़ाई है ना। तुम अभी युद्ध के मैदान पर हो। यो है बाहुबल से लड़ने वाली हिंसक सेना। तुम हो पक्के अहिंसक तुम राज लेते हो अहिंसा से। हिंसा भी दो प्रकार की होती है। एक है काम कटारी चलाना। दूसरी है किसी को मारने की हिंसा। तुम अभी डबल अहिंसक बनते हो। यही योग बल की लड़ाई को कोई नहीं जानते हैं। अहिंसा ही किसको कहा जाता है यह भी कोई नहीं जानते हैं। भक्ति मार्ग की सामग्री कितनी भारी है। गाते भी हैं पतित पावन आओ। परन्तु मैं कैसे आकर पावन बनाता हूँ यह कोई नहीं जानते हैं। गीता में ही भूल कर दी है। जो मनुष्य को भगवान कह दिया है। शास्त्र मनुष्यों ने ही बनाये हैं। मनुष्य ही पढ़ते रहते हैं। देवताओं को तो शास्त्र पढ़ने की दरकार ही नहीं है। न वहाँ पर कोई शास्त्र होते ही हैं। भक्ति बिलकुल अलग चीज है। ज्ञान अलग चीज है। ज्ञान भक्ति पीछे वैराग। किसका वैराग? भक्ति का वैराग पुरानी दुनियाँ का वैराग। जो कुछ इन आंखों से देखते आते हैं वह सब ... इन सबका वैराग। इन सारी छी-2 पुरानी दुनियाँ का वैराग। पुराने शरीर का भी बेहद ... इन आंखों से जो कुछ भी देखते हो नहीं रहेगा। बाकी नई दुनियाँ का तुम दिव्य दृष्टि से साक्षात्कार करते हो। बच्चे जानते हो हम पढ़ते हैं नई दुनियाँ के लिये। यह पढ़ाई कोई इस जन्म के लिए नहीं है। और कोई पढ़ाई यहाँ थोड़े सतयुग में होती है वो उसी समय उसी जन्म के लिये होती है। अभी तो ... संगम। इसलिये तुम जो करते हो उसकी प्रालब्ध तुमको नई दुनियाँ में मिलनी है। कितनी बड़ी प्रालब्ध ... मिलती है। बेहद के बाप से बेहद सुख की प्रालब्ध मिलती है। तो बच्चों को पूरा पुरुषार्थ कर ... चलना चाहिये। बाप है श्री-2 श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ। उनसे तुम बनते हो श्री श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ। वो तो सदैव ... ही है। तुमको श्रेष्ठ बनाते हैं परन्तु 84 जन्म लेते फिर तुम भ्रष्ट बन जाते हो। बाप कहते हैं मैं

जन्म मरण में नहीं आता हूँ। मैं इस साधारण तन में प्रवेश करता हूँ। जिससे तुम बच्चों ने पहचाना है। तुम्हारा बुद्धि छोटा झाड़ है। झाड़ को तूफान भी लग जाते हैं। बहुत पत्ते झड़ते रहते हैं। ढेर फूल निकलते हैं फिर तूफान लगने से गिर पड़ते हैं। कोई-2 अच्छी रीति फल लग जाते हैं। फिर भी माया के तूफान से गिर पड़ते हैं। माया का तूफान बहुत तेज है। उस तरफ है बाहुबल। इस तरफ है योग अथवा याद। तुम याद अगर पक्का कर लो। वो लोग योग-2 अक्षर कहते रहते हैं। तुम्हारी है याद चलते फिरते उसमें योग नहीं कहेंगे। योग अक्षर सन्यासियों का नामी ग्रामी है। अनेक प्रकार के योग सिखाते हैं। बाप कितना सहज बताते हैं। उठते बैठते चलते फिरते बाप को याद करो। जैसे आशिक माशूक सब कुछ करते हुए भी एक दो को याद करते हैं ना। तुम भी आधा कल्प के आशिक हो। मुझे याद करते आये हो। अब मैं आया हुआ हूँ। आगे तो आत्मा को भी नहीं जानते थे। अब बाप आकर रियलाइज कराते हैं। यह बहुत महीन बातें हैं। मोटी बुद्धि वाले समझ नहीं सकते। आत्मा कितनी छोटी और अविनाशी है। ना आत्मा घिसती है ना उसमें जो पार्ट भरा हुआ है वो विनाश हो सकता है। शास्त्रों में पाण्डवों यह बातें लिखी हुई हैं। बाप समझाते हैं कि उनकी है ही बाप से विपरीत बुद्धि। विपरीत बुद्धि अर्थात दुश्मनी। प्रीत बुद्धि अर्थात बाप से प्यार। प्रीत और विपरीत यह भी ड्रामा में नूँध है। इनका अर्थ भी कोई समझ नहीं सकते। कोई से पूछो तो विनाश काले प्रीत बुद्धि विजयन्ति और विनाश काले विपरीत बुद्धि का अर्थ क्या है तो एक भी साधु सन्त नहीं समझा सकेंगे। बाप से प्रीत रखने में ही मेहनत है। तुम बच्चों को मेहनत बहुत करनी पड़ती है। ज्ञान तो बहुत आसान है। 84 जन्मों के चक्र का ज्ञान बहुत सहज है। बाकी विनाश काले प्रीत बुद्धि और विपरीत बुद्धि यह याद के लिये कहा जाता है। याद अच्छी है तो प्रीत बुद्धि कहा जाता है। प्रीत भी अव्यभिचारी चाहिये। अपने से पूछना है कि हम बाबा को कितना याद करते हैं? यह भी समझते हैं बाप से प्रीत रखते-2 जब कर्मातीत अवस्था होगी तो यह शरीर छूटेगा और लड़ाई लगेगी। जितना बाप से प्रीत रखेंगे उतना तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। कर्मातीत तो एक ही समय होंगे ना। जब सबकी प्रीत बुद्धि हो जाती है। उस समय फिर विनाश होता है। तब तक झगड़े आदि लगते रहते हैं। मनुष्य तो बिल्कुल जैसे कि बन्दर बुद्धि हैं। विलायत वाले भी समझते हैं कि मौत जरूर है। कोई प्रेरक है जो हमसे यह बनवाते हैं। परन्तु कर ही क्या सकते हैं। वो भी ड्रामा के बन्धन में बांधे हुए हैं। अपने साइंस बल से अपने कुल का मौत लाते हैं। ड्रामा अनुसार विनाश जरूर होना ही है। बाप कहते हैं पावन दुनिया में ले जाऊँगा। तो मच्छरों मिसल ले जायेंगे। बाप तो कालों का काल है। यह बातें कोई भी नहीं जानते। मनुष्य बिल्कुल जैसे कि भेड़ हैं। गाया हुआ है मिरुआ मौत मलूका शिकार। वो तो कहते हैं विनाश बन्द हो जावे शान्ति हो जावे। और विनाश बिना सुख-शान्ति फिर स्थापन होगी। इस लिये चक्र पर जरूर समझाओ। यह चक्र है यहाँ से कोई मुक्ति धाम में जावेंगे कोई सुख धाम में जावेंगे। अभी स्वर्ग के गेटस खुल रहे हैं। बाबा ने कहा है इस पर भी ए

****** * * * * ****** ***

छपवाओ। गेट वे टू शान्तिधाम। सुख धाम। यह तो है ही दुःख धाम। परन्तु बन्दर लोग उसका भी नहीं समझेंगे। है बहुत सहज। बाप कैसे आकर शान्तिधाम सुख धाम के गेटस खोलते हैं। यह तो तुम्ही समझ सकते हो। मनुष्य तो जैसे कि बन्दर मिसल हैं। कोटों में कोऊ मुश्किल ही समझते हैं। तुमको प्रदर्शनी में दिल शिकस्त नहीं होना चाहिये। प्रजा तो बनती है ना। मंजिल बड़ी है। मो... लगती है। मेहनत है ही याद की। उसमें बहुत फेल होते हैं। याद भी अव्यभिचारी चाहिये। माया भुला देती है। मेहनत बिगर थोड़ेही कोई विश्व का मालिक बन सकते हैं। पुरुषार्थ पूरा करना चाहिये। हम सुख धाम के मालिक थे चक्र लगाकर तमोप्रधान बने हैं। फिर बाप को याद कर सतोप्रधान बनते हैं। 84 का चक्र लगाया है। अब बाप को याद करना है। अच्छा बच्चों को गुड मार्निंग